प्रारंभिक परीक्षा

मुसी नदी

संदर्भ

HYDRAA (हैदराबाद आपदा प्रतिक्रिया और संपत्ति संरक्षण एजेंसी) ने मूसी नदी तल के 9.6 एकड़ से अधिक क्षेत्र को अवैध अतिक्रमण से मुक्त कराया।

मुसी नदी के बारे में -

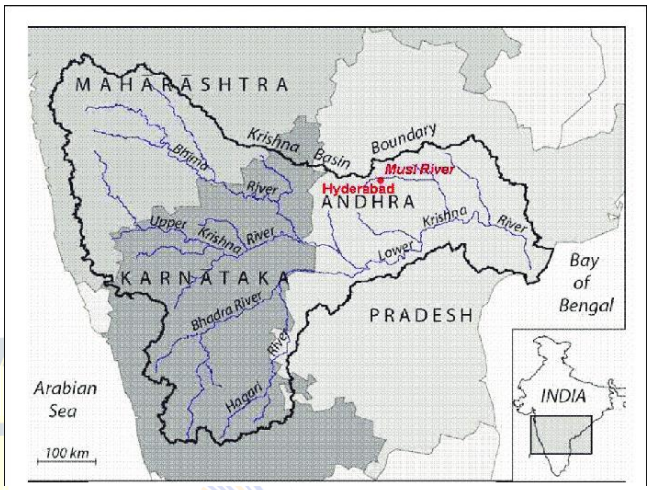

- **स्थान:** यह नदी दक्षिण भारतीय राज्य **तेलंगाना के दक्कन पठार से होकर बहती है**।
- **सहायक नदी:** कृष्णा नदी
- **पूर्व में इसे मुचुकुंदा नदी के नाम से जाना जाता था।**
- **उद्गम:** इसका **उद्गम रंगारेड्डी ज़िले के विकाराबाद के पास अनंतगिरि पहाड़ियों में होता है,** जो हैदराबाद से लगभग **90** किलोमीटर पश्चिम में स्थित है।
- **निर्माण**: यह नदी दो छोटी धाराओं — **एसी (8 किमी)** और **मूसा (13 किमी)** — के संगम से बनती है।
- **बांध:** हिमायत सागर, उस्मान सागर

स्रोत: द हिंदू

प्रलय मिसाइल

संदर्भ

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने ओडिशा तट के पास स्थित डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वीप से **प्रलय मिसाइल** के दो लगातार सफल उड़ान परीक्षण (फ्लाइट-टेस्ट) किए।

प्रलय मिसाइल के बारे में -

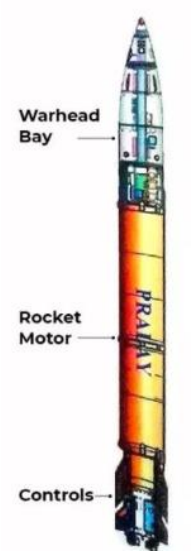

- **प्रकार:** उच्च परिशुद्धता के लिए उन्नत मार्गदर्शन और नेविगेशन प्रणाली के साथ **स्वदेशी रूप से विकसित अर्ध-बैलिस्टिक मिसाइल।**
- भारत की पनडुब्बी से प्रक्षेपित बैलिस्टिक मिसाइलों (SLBM) की K-श्रृंखला से संबंधित है।
- **प्रणोदन**: ठोस प्रणोदक द्वारा संचालित।
- **रेंज: 150 से 500 किमी की परिचालन सीमा।**
- **पेलोड क्षमता: 500 से 1,000 किलोग्राम तक पेलोड** ले जाने में सक्षम।
- **लॉन्च प्लेटफार्म:** मोबाइल लॉन्चर से लॉन्च किया जा सकता है।
- **सटीकता**: उन्नत मार्गदर्शन प्रणालियों से लैस, 10 मीटर से कम की सर्कुलर एरर प्रोबेबल (CEP) प्राप्त करने वाली।
- **गति**: **मैक 6.1 की टर्मिनल गति** प्राप्त करती है।
- **लक्ष्य प्रकार:** रडार प्रतिष्ठानों, कमांड केंद्रों, हवाई पट्टियों और अन्य उच्च मूल्य वाली संपत्तियों को नष्ट करने के लिए डिज़ाइन किया गया।
- **गतिशीलता**: एक निश्चित दूरी तय करने के बाद हवा में अपना रास्ता बदल सकती है।
- **द्वारा विकसित:** अनुसंधान केंद्र इमारत (आरसीआई), अन्य डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के सहयोग से।
- **उद्योग भागीदार:** इसमें भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल), भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) और कई एमएसएमई और निजी उद्योग शामिल हैं।

स्रोत: द हिंदू

विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति 2025

संदर्भ

'विश्व में खाद्य सुरक्षा एवं पोषण की स्थिति (SOFI) 2025' रिपोर्ट हाल ही में जारी की गई।

विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति (SOFI) रिपोर्ट 2025 के बारे में -

- **प्रकाशक: यह संयुक्त राष्ट्र की पांच एजेंसियों की एक वार्षिक संयुक्त रिपोर्ट है:**
  - FAO (खाद्य और कृषि संगठन)
  - IFAD (अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष)
  - UNICEF (संयुक्त राष्ट्र बाल कोष)
  - WFP (विश्व खाद्य कार्यक्रम)
  - WHO (विश्व स्वास्थ्य संगठन)
- यह सतत विकास लक्ष्य (SDG) 2 के लक्ष्य 2.1 और 2.2 के लिए वार्षिक वैश्विक निगरानी रिपोर्ट है।

SOFI 2025 रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं -

- **भूखमरी का स्तर (2024):** वर्ष 2024 में विश्वभर में लगभग 720 मिलियन (72 करोड़) लोग भूखमरी से ग्रस्त रहे — जो कि विश्व जनसंख्या का लगभग 8.2% है।
- **पिछले वर्षों से तुलना:**
  - भूखमरी अब भी कोविड-पूर्व स्तर से काफी अधिक है।
  - 2015 की तुलना में लगभग 96 मिलियन अधिक लोग दीर्घकालिक भूखमरी से पीड़ित हैं।
- **खाद्य असुरक्षा:**
  - अनुमानतः 2.3 बिलियन लोग 2024 में मध्यम से गंभीर खाद्य असुरक्षा का शिकार रहे।
- **कुपोषण का क्षेत्रीय वितरण:**
  - **एशिया:** 323 मिलियन कुपोषित लोगों के साथ सबसे अधिक।
  - **अफ्रीका:** 307 मिलियन के साथ दूसरे स्थान पर।
  - **लैटिन अमेरिका और कैरिबियन:** लगभग 34 मिलियन।
- **क्षेत्रवार रुझान:**
  - दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिणी एशिया और दक्षिण अमेरिका में भूख के स्तर में गिरावट आई।
  - अन्य क्षेत्रों में, विशेष रूप से अफ्रीका में, खाद्य असुरक्षा बनी रही या बढ़ गई।

स्रोत: WHO

मानव निर्मित बांधों ने पृथ्वी के ध्रुवों को स्थानांतरित कर दिया है

संदर्भ

एक हालिया अध्ययन में शोधकर्ताओं ने पाया कि **पृथ्वी का ध्रुव 1835 और 2011 के बीच लगभग 3.6 फीट (1.1 मीटर) स्थानांतरित हो गया है।**

ध्रुवीय स्थानांतरण (Pole Shift) का कारण क्या है?

- **इसका मुख्य कारण मानव निर्मित बांधों के कारण पृथ्वी की सतह पर द्रव्यमान का पुनर्वितरण है।**
- ये बांध अरबों टन पानी संग्रहित करते हैं, जिससे पृथ्वी के द्रव्यमान का वितरण बदल जाता है।
- इस पुनर्वितरण के कारण **"वास्तविक ध्रुवीय भटकन(true polar wander)"** की स्थिति उत्पन्न हुई, जहां पृथ्वी का घूर्णन अक्ष सतह के द्रव्यमान में परिवर्तन के कारण थोड़ा स्थानांतरित हो जाता है।

स्रोत: टेक्नो-साइंस

ध्वनिक निगरानी तकनीकें(Acoustic monitoring Techniques)

संदर्भ

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान ने **ध्वनिक निगरानी तकनीक** का उपयोग करके **अपनी पहली चरागाह पक्षी जनगणना आयोजित की।**

ध्वनिक निगरानी तकनीकें -

- **यह एक गैर-आक्रामक (non-invasive) तकनीक है, जो प्राणियों की ध्वनियों को रिकॉर्ड करने और उनका विश्लेषण करने के लिए साउंड-रिकॉर्डिंग उपकरणों का उपयोग करती है।** इसका उद्देश्य जैव विविधता, व्यवहार और पारिस्थितिकीय स्वास्थ्य का अध्ययन करना होता है।
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - **निष्क्रिय निगरानी**: परिवेशी ध्वनियों को लगातार रिकॉर्ड करने के लिए उपकरणों को लक्षित आवासों में रखा जाता है।
  - **गैर-अंतर्वेधी**: मायावी, रात्रिचर, या छिपी हुई प्रजातियों को बिना परेशान किए उनका अध्ययन करने के लिए आदर्श।
  - **डेटा-रिच**: प्रजातियों की उपस्थिति, प्रचुरता और गतिविधि पैटर्न के विश्लेषण के लिए विशाल ऑडियो डेटा उत्पन्न करता है।
- **प्रयुक्त प्रौद्योगिकी:**
  - **स्वायत्त ध्वनिक रिकार्डर**: क्षेत्रीय स्थानों पर तैनात।
  - **स्पेक्ट्रोग्राम**: समय के साथ ध्वनि आवृत्तियों का दृश्य प्रतिनिधित्व।
  - **एआई/एमएल उपकरण**: **बर्डनेट**, **रेवेन प्रो** आदि जैसे सॉफ्टवेयर ध्वनि पैटर्न के आधार पर प्रजातियों की पहचान करने में मदद करते हैं।
- **अनुप्रयोग:**
  - **जैव विविधता सर्वेक्षण**: पक्षी, उभयचर और चमगादड़ जनसंख्या अध्ययन के लिए उपयोग किया जाता है।
  - **संरक्षण प्रयास**: लुप्तप्राय प्रजातियों और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य पर नज़र रखने में मदद करता है।
  - **आवास निगरानी**: मौसमी और दीर्घकालिक पारिस्थितिक परिवर्तनों की निगरानी।
  - **अवैध गतिविधि का पता लगाना**: गोलियों, चेनसॉ का पता लगाना - शिकार विरोधी निगरानी में उपयोगी।
- **लाभ:**
  - दूरस्थ या घने आवासों के लिए उपयुक्त।
  - अधिकांश मौसम की परिस्थितियों में दिन-रात काम करता है।
  - अवलोकन में मानवीय पूर्वाग्रह को न्यूनतम करता है।
- **सीमाएँ:**
  - उच्च भंडारण और शक्ति की आवश्यकता है।
  - ऑडियो डेटा का प्रसंस्करण और विश्लेषण समय लेने वाला काम है।
  - ओवरलैपिंग कॉल या पृष्ठभूमि शोर प्रजातियों की पहचान में बाधा डाल सकते हैं।

स्रोत: इंडियनएक्सप्रेस

समाचार में स्थान

सेवेरो-कुरिल्स्क(Severo-Kurilsk)

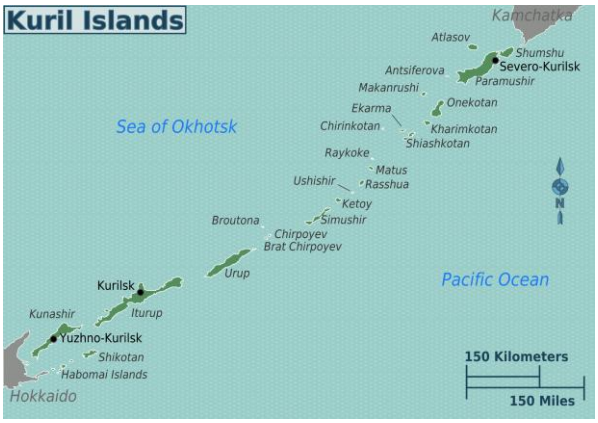

समाचार? 30 जुलाई, 2025 को रूस के कमचटका प्रायद्वीप के पास 8.8 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया, जिससे **सुनामी** आई और तटीय शहर **सेवेरो-कुरिल्स्क में बाढ़** आ गई।

इसके बारे में -

- **स्थान:** रूस के सखालिन ओब्लास्ट में कुरील द्वीप समूह के भाग, परमुशीर द्वीप पर स्थित है।
- **टेक्टोनिक क्षेत्र:** यह प्रशांत अग्नि वलय के साथ, कुरील-कमचटका ट्रेंच के पास स्थित है, जो एक प्रमुख सबडक्शन क्षेत्र है।

स्रोत: एनडीटीवी

समाचार संक्षेप में

इंट्राहेपेटिक एक्टोपिक प्रेगनेंसी(Intrahepatic Ectopic Pregnancy)

खबर? उत्तर प्रदेश में एक महिला इंट्राहेपेटिक एक्टोपिक प्रेगनेंसी से पीड़ित पाई गई।

इन्ट्राहैपेटिक एक्टोपिक प्रेगनेंसी क्या है?

- यह एक अत्यंत **दुर्लभ** (**विश्वभर में केवल 7 मामले दर्ज** हैं) और जीवन के लिए खतरा पैदा करने वाला एक्टोपिक प्रेगनेंसी का प्रकार है, जिसमें **निषेचित अंडाणु गर्भाशय या फैलोपियन ट्यूब के बजाय यकृत ऊतक के भीतर प्रत्यारोपित और विकसित होता है।**
- अन्य देशों में रिपोर्ट किए गए मामले - **संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और नाइजीरिया**।

स्रोत: डेक्कन हेराल्ड

रातड़िया की ढेरी

समाचार? राजस्थान के जैसलमेर जिले में रातड़िया री ढेरी में एक नया हड़प्पा स्थल पाया गया है।

इसके बारे में -

- **खोजकर्ता**: **दिलीप कुमार सैनी** द्वारा खोजा गया।
- **यह राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में खोजा गया पहला ज्ञात सिंधु घाटी सभ्यता का स्थल है।**
- **स्थल की तिथि: परिपक्व हड़प्पा काल** — लगभग **2600–1900 ईसा पूर्व**।
- **पहचान:** इसे एक **ग्रामीण हड़प्पा बस्ती** के रूप में चिन्हित किया गया है, जो **सिंध क्षेत्र के हड़प्पाई नेटवर्क** से जुड़ी हुई थी।
- इस स्थल पर पाई गई कलाकृतियों में शामिल हैं:
  - लाल मिट्टी के बर्तन (कटोरे, बर्तन, जार)
  - मिट्टी और शंख की चूड़ियाँ
  - टेराकोटा वस्तुएँ
  - पत्थर के औजार और पच्चर के आकार की ईंटें
- **इस स्थल पर पाए गए भट्टे, कन्मेर (गुजरात) और मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान) के भट्टों से मिलते जुलते हैं, जो एक अच्छी तरह से विकसित और संभवतः औद्योगिक बस्ती का संकेत देते हैं।**

अन्य सिंधु घाटी स्थल -

स्रोत: TOI

संपादकीय सारांश

उत्पादकता वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए औपचारिकीकरण अपनाएँ

संदर्भ

- **उद्योगों के वार्षिक सर्वेक्षण (ASI)** के अनुसार, **विनिर्माण क्षेत्र में संविदा श्रमिकों(contract labour) का अनुपात 1999-2000 में 20% से बढ़कर 2022-23 में सभी उद्योगों में 40.7% हो गया।**
    - इस बढ़ती हुई संविदाकरण प्रणाली का जब दुरुपयोग किया जाता है, तो इससे उत्पादकता में बाधा उत्पन्न होती है - जो दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित करने के लिए औपचारिकीकरण को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित करता है।

भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए औपचारिकीकरण(Formalisation)क्यों महत्वपूर्ण है?

- **श्रम उत्पादकता में वृद्धि:** औपचारिक श्रमिकों को प्रशिक्षण, नौकरी की सुरक्षा और प्रदर्शन प्रोत्साहन मिलने की अधिक संभावना होती है।
    - स्थिर रोजगार संबंध कार्यस्थल पर सीखने को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे समय के साथ दक्षता और उत्पादन में सुधार होता है।
- **सामाजिक सुरक्षा और श्रमिक कल्याण सुनिश्चित करता है:** औपचारिक नौकरियों में स्वास्थ्य बीमा, पेंशन, मातृत्व लाभ और भविष्य निधि तक पहुंच होती है।
    - यह श्रमिकों को वेतन की चोरी, मनमाने ढंग से बर्खास्तगी और शोषणकारी स्थितियों से बचाता है - और कल्याण को बढ़ाता है।
- **घरेलू मांग को मजबूत करना:** औपचारिक श्रमिकों की आय स्थिर होती है और वे अधिक खर्च करते हैं, जिससे उपभोग बढ़ता है, जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।
    - आय असमानता को कम करता है और आर्थिक लचीलापन बढ़ाता है।
- **सरकारी राजस्व में वृद्धि:** औपचारिकीकरण से अधिक उद्यम और श्रमिक कर के दायरे में आ जाते हैं तथा ईपीएफ (कर्मचारी भविष्य निधि) और ईएसआई (कर्मचारी राज्य बीमा) जैसी सामाजिक सुरक्षा प्रणालियां भी इसमें शामिल हो जाती हैं।
    - इससे बेहतर राजकोषीय नियोजन और बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य और शिक्षा पर पुनर्वितरण व्यय संभव हो सकेगा।
- **तकनीकी उन्नयन को प्रोत्साहित करता है:** औपचारिक फर्मों द्वारा प्रौद्योगिकी, अनुसंधान एवं विकास, तथा प्रक्रिया सुधार में निवेश करने की अधिक संभावना होती है।
    - अनौपचारिक कंपनियां अक्सर उत्पादकता बढ़ाने वाले निवेशों के बजाय कम कौशल वाले, सस्ते श्रम पर निर्भर रहती हैं।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार:** वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं श्रम और पर्यावरण मानकों के अनुपालन की मांग तेजी से बढ़ा रही हैं।
    - औपचारिकीकरण यह सुनिश्चित करता है कि भारतीय उद्योग विश्व स्तर पर विश्वसनीय हों और उच्च मूल्य वाले वैश्विक बाजारों में भाग ले सकें।

उत्पादकता वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए भारत को औपचारिकीकरण अपनाने की आवश्यकता क्यों है?

- **संविदाकरण के माध्यम से लागत में प्रतिकूल कटौती:** यद्यपि संविदा श्रम अल्पकालिक लागत को कम कर सकता है**,** लेकिन इस पर अत्यधिक निर्भरता - विशेष रूप से छोटे और मध्यम उद्यमों में - के कारण नियमित श्रम-प्रधान इकाइयों की तुलना में श्रम उत्पादकता में औसतन 31% की गिरावट आई है।
- **कार्यबल अस्थिरता और कम कौशल निवेश**: संविदात्मक नौकरियां उच्च श्रम कारोबार के कारण नियोक्ताओं को नौकरी पर प्रशिक्षण और कौशल विकास में निवेश करने से हतोत्साहित करती हैं, जो नवाचार और दक्षता पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

- **मजदूरी और श्रम लागत शोषण:** अनुबंधित श्रमिकों की कमाई काफी कम होती है (कुछ उद्योगों में 85% तक कम श्रम लागत) और उनकी सौदेबाजी की शक्ति कमजोर होती है, जिसके कारण श्रमिकों में व्यापक असंतोष और कम मनोबल होता है, जिससे उत्पादकता कम हो जाती है।
- **तीसरे पक्ष के साथ प्रिंसिपल-एजेंट समस्या**: ठेकेदारों को रोजगार आउटसोर्स करने से अक्सर गलत प्रोत्साहन मिलता है, जिससे काम से बचने और निम्न गुणवत्ता वाले आउटपुट की संभावना बढ़ जाती है।
- **केवल उच्च कौशल वाले क्षेत्रों में सीमित लाभ**: अनुबंध श्रम से उत्पादकता लाभ केवल बड़े, उच्च कौशल वाले और पूंजी-प्रधान क्षेत्रों तक ही सीमित है, जो औपचारिक विनिर्माण का केवल 20% हिस्सा बनाते हैं - जिससे अधिकांश (80%) प्रतिकूल रूप से प्रभावित होते हैं।
- **दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता:** औपचारिक क्षेत्र के भीतर अनौपचारिकीकरण, कार्यबल स्थिरता, कौशल संचय और श्रम मानकों को कमजोर करके दीर्घकालिक औद्योगिक प्रतिस्पर्धा को खतरे में डालता है , जो सभी सतत विकास के लिए आवश्यक हैं।

औपचारिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत सुझाव -

- **औद्योगिक संबंधों पर श्रम संहिता (2020) को लागू करना:** उस संहिता को लागू करें जो वैधानिक लाभों के साथ प्रत्यक्ष निश्चित अवधि की भर्ती की अनुमति देता है, शोषण पर अंकुश लगाते हुए तीसरे पक्ष के ठेकेदारों पर निर्भरता को कम करता है।
- **लंबी अवधि के निश्चित अनुबंधों को प्रोत्साहित करना**: लंबे, अधिक स्थिर रोजगार संबंधों को प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक सुरक्षा योगदान में रियायतें और कौशल कार्यक्रमों तक सब्सिडी वाली पहुंच प्रदान करना।
- **PMRPY योजना को पुनर्जीवित करना:** प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना (**PMRPY**) को वापस लाना और इसका विस्तार करना, ताकि नियोक्ताओं को ईपीएफ/ईपीएस अंशदान में सब्सिडी देकर नौकरियों को औपचारिक बनाने में मदद मिल सके।
- **श्रम निरीक्षण और अनुपालन को सुदृढ़ बनाना**: श्रम कानूनों का कड़ाई से प्रवर्तन और अनुपालन जांच सुनिश्चित करना, ताकि कम्पनियों को अनुबंध श्रम का दुरुपयोग करने से रोका जा सके।
- **लघु एवं मध्यम उद्यमों (एसएमई) को लक्षित सहायता**: अनुबंध-भारी से नियमित रोजगार मॉडल में परिवर्तन में सहायता के लिए एसएमई को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करना।
- **उद्योग-अकादमिक कौशल संबंधों को बढ़ावा देना**: कौशल विकास के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करना, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अनुबंधित और नियमित श्रमिक दोनों आवश्यक प्रशिक्षण के साथ उत्पादक रूप से कार्यरत हों।

स्रोत: द हिंदू

भारत के बारे में गिनी सूचकांक गलत क्यों है?

संदर्भ

गिनी सूचकांक में **भारत का स्कोर 25.5 है** - जो इसे **सर्वाधिक समान समाजों में से एक** बनाता है - फिर भी **यह जमीनी हकीकत को प्रतिबिंबित नहीं करता है**।

गिनी सूचकांक क्या है?

- **गिनी सूचकांक (या गिनी गुणांक) किसी राष्ट्र या समूह के भीतर आय या धन असमानता का एक सांख्यिकीय माप है:**
- यह 0 से 1 (या प्रतिशत के रूप में व्यक्त करने पर 0 से 100) के बीच होता है।
    - 0 पूर्ण समानता को दर्शाता है (सभी की आय समान है)।
    - 1 (या 100) पूर्ण असमानता को दर्शाता है (एक व्यक्ति के पास सारी आय होती है)।
- **कम गिनी सूचकांक अधिक समानता को दर्शाता है, जबकि उच्च स्कोर अधिक असमानता को दर्शाता है।**
- **गिनी सूचकांक का महत्व क्या है?**
    - **आर्थिक नियोजन**: सरकारों को असमानता के रुझान को समझने और लक्षित कल्याणकारी योजनाएं तैयार करने में सहायता करता है।
    - **वैश्विक तुलना**: देशों में आय वितरण की तुलना करने की अनुमति देता है।
    - **सामाजिक अंतर्दृष्टि:** बढ़ती असमानता के कारण सामाजिक अशांति या हाशिए पर डाले जाने के संभावित जोखिम पर प्रकाश डालता है।
    - **विकास सूचक:** मानव विकास सूचकांक (HDI) और विश्व बैंक रिपोर्ट जैसे व्यापक सूचकांकों में एक घटक के रूप में उपयोग किया जाता है।

गिनी सूचकांक भारत के बारे में कैसे गलत हो सकता है?

- **अनौपचारिक क्षेत्र को छोड़कर:** भारत के कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा (90% से अधिक) अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है, जहां आय के आंकड़े सटीक रूप से दर्ज नहीं किए जाते हैं।
    - गिनी गणना आय या कर डेटा पर आधारित होती है, जिसमें विशाल अनौपचारिक आबादी को शामिल नहीं किया जाता है, तथा वास्तविक असमानता को कम करके बताया जाता है।
- **डेटा अंतराल और कर सीमा:** भारत की वयस्क जनसंख्या का केवल एक छोटा सा भाग (10% से भी कम) ही कर दाखिल करता है।
    - इससे आंकड़ों में विकृति पैदा होती है, क्योंकि सबसे धनी लोग अपनी आय कम बताते हैं, जबकि सबसे गरीब लोग सिस्टम के लिए अदृश्य रहते हैं।
- **धन असमानता की अनदेखी:** गिनी सूचकांक मुख्यतः आय पर केंद्रित है, धन पर नहीं।
    - भारत में धन-सम्पदा संकेन्द्रण दर सर्वाधिक है - शीर्ष 1% के पास राष्ट्रीय आय का 22.6% से अधिक हिस्सा है, जो गंभीर धन असमानता को दर्शाता है, जिसे गिनी ने नजरअंदाज कर दिया है।
- **अंतर्विभागीय असमानताओं को नहीं पकड़ता:** इसमें लिंग, जाति, क्षेत्रीय, शिक्षा या डिजिटल असमानताओं को शामिल नहीं किया गया है - जो सभी भारतीय समाज में संरचनात्मक रूप से अंतर्निहित हैं।
    - उदाहरण के लिए, केवल 25% ग्रामीण महिलाओं के पास इंटरनेट का उपयोग है, जबकि ग्रामीण पुरुषों के पास यह संख्या 49% है, जिससे आर्थिक भागीदारी और स्वायत्तता प्रभावित होती है।
- **सेवाओं तक असमान पहुंच:** गिनी सूचकांक गैर-मौद्रिक असमानताओं पर विचार नहीं करता है जैसे - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच, स्वास्थ्य सेवाएं, डिजिटल बुनियादी ढांचा।
    - ये जीवन के अवसरों और अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता को गहराई से प्रभावित करते हैं।
- **शहरी-ग्रामीण एवं अंतर-शहरी असमानता छिपी हुई:** गिनी में प्रयुक्त औसत शहरों या क्षेत्रों के भीतर व्यापक असमानताओं को छिपा सकते हैं।

- उदाहरण के लिए, एक लक्जरी कार के मालिक और एक ही मोहल्ले में रहने वाले घरेलू कामगारों का जीवन बहुत भिन्न हो सकता है, लेकिन राष्ट्रीय औसत में ऐसी सूक्ष्म-स्तरीय असमानताएं खो जाती हैं।

निष्कर्ष -

गिनी सूचकांक एक उपयोगी सांख्यिकीय उपकरण तो है, लेकिन इसकी कार्यप्रणाली भारत जैसे जटिल समाजों में असमानता को अति-सरल बना देती है। यह अनौपचारिक अर्थव्यवस्थाओं, धन के संकेंद्रण और लिंग, डिजिटल तथा जाति-आधारित भेदभाव जैसी स्तरित असमानताओं को नज़रअंदाज़ कर देता है। इसलिए, **कम गिनी स्कोर के बावजूद, भारत में जीवन की वास्तविकताओं में गहरी असमानता बनी हुई है, और इस सूचकांक पर आधारित किसी भी उत्सव को सावधानी और आलोचनात्मक विश्लेषण के साथ देखा जाना चाहिए।**

स्रोत: द हिंदू

मूल्य संवर्धन(Value Addition)

राजेंद्र चोल का गंगा अभियान

गंगा अभियान (उत्तरी भारत अभियान) – लगभग 1023 ई.

- **उद्देश्य**: उत्तर भारत पर प्रभुत्व स्थापित करना तथा चोल राजधानी में गंगा जल लाना।
- **मार्ग और विजय**:
    - वेंगीनाडु (आधुनिक आंध्र प्रदेश) से आरंभ हुआ
    - चक्रकोट्टम (चित्रकूट, छत्तीसगढ़) पर विजय प्राप्त की
    - मासुनी देशम (ओडिशा/छत्तीसगढ़ के क्षेत्र) को पराजित किया
    - कोशल (दक्षिणा/महाकोशल, छत्तीसगढ़) को अधीन किया
    - दंडभुक्ति (दक्षिण बंगाल के हिस्से) पर अधिकार किया
    - राढ़ (हुगली, हावड़ा, मुर्शिदाबाद, बीरभूम) की ओर बढ़े
    - गंगा पार कर वंगाल देश (पूर्वी बंगाल) में प्रवेश किया
    - पाल वंश के महीपाल को पराजित किया
- **परिणाम**: गंगा जल लाने का प्रतीकात्मक कार्य; चोलगंगम तालाब का निर्माण; शाही प्रतिष्ठा का दावा।

दक्षिणपूर्व एशियाई नौसेना अभियान (कदारम/कटहा अभियान) - 1025 ई.

- **उद्देश्य**: समुद्री व्यापार मार्गों पर नियंत्रण करना और नौसैनिक वर्चस्व स्थापित करना।
- **लक्ष्य**:
    - श्रीविजय साम्राज्य (आधुनिक सुमात्रा, इंडोनेशिया में स्थित)
    - कदारम् (आधुनिक केदाह, मलेशिया) पर अधिकार किया
    - श्रीविजयन बंदरगाहों पर छापा मारा: ताम्ब्रालिंगा, पन्नई, मलाइयुर, मयिरुडिंगम, इलामुरी, आदि।
- **परिणाम**: श्रीविजयनगर आधिपत्य का अस्थायी विघटन; दक्षिण-पूर्व एशिया में चोल नौसैनिक शक्ति को मान्यता।

पांड्य और चेर अभियान (दक्षिणी भारत) -

- यद्यपि राजेंद्र अपने पिता राजराज प्रथम के शासनकाल के दौरान पहले से ही चोल नियंत्रण में था, फिर भी उसने निम्नलिखित को और अधिक अधीन कर लिया:
    - **पांड्य प्रदेश** (मदुरै क्षेत्र)
    - **चेर प्रदेश** (केरल क्षेत्र)
- **उद्देश्य**: दक्षिण में चोल प्रभुत्व को पुनः स्थापित करना।

सीलोन (श्रीलंका) -

- राजराज प्रथम द्वारा शुरू किए गए अभियानों का सिलसिला जारी रहा
- अनुराधापुर साम्राज्य का पूर्ण विलय
- दशकों तक सम्पूर्ण श्रीलंका पर चोल नियंत्रण सुनिश्चित किया।